हिमालय के लघु भू–चित्रों के रचयितता बिरेश्वर सेन

डॉ. कविता सिंह
सहायक प्रोफ़ेसर (स्टेज–III)
सरदार शोभा सिंह डिपार्ट्मेन्ट ऑफ फॉइन आर्ट,
पंजाबी युनिवर्सिटी, पटियाला
Email:singhart6@gmail.com

सारांश

इस शोध पत्र में प्रमुख चित्रकार–'बिरेश्वर सेन' की कला यात्रा, जीवन दर्शन, उपलब्धियाँ एवं कला जगत को उनकी अनूठी देन को सूक्ष्म व संवेदनशील रूप से वर्णन करने का प्रयास किया गया है। बिरेश्वर सेन बंगाल स्कूल शैली के संस्थापक महान चित्रकार 'अंबनिद्रंनाथ टैगोर' व उनके सहयोगी 'नंद लाल बोस' के शिष्य थे। इनका नाम भारत के उच्च कोटी के कला रत्नों में सुनहरी अक्षरों में लिखा जाएगा क्योंकि आपकी कला ने आम और खास सब को प्रभावित करते हुए नई पीढ़ी के चित्रकारों के लिए अनमोल व अनूठे रास्तों को खोला है।

मुख्य शब्दः *बिरेश्वर सेन, वॉटरकलर, राय बहादुर सेलेश्वर सेन, निहारनलिनी, लखनऊ कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स, अबनिद्रंनाथ टैगोर, नंद लाल बोस, निकोलस रोरिक, हिमालय, डा0 बी.एन. गोस्वामी, डा0 एम.एस रंधावा, भू–चित्र ।*

प्रस्तावना

इंगलैंड के प्रसिद्ध कवि– **'विलियम ब्लेक'** की एक कविता में रेट के एक कण में पूरे विश्व को देखने का ज़िक्र है। कवियों की कल्पना की उड़ान अद्भुत होती है। वे इसी कविता की अगली पंक्ति में लिखते हैं, *''हमें एक फूल के भीतर पूरा स्वर्ग नज़र आ सकता है। हाथ की हथेली पर अंनन्तता तथा शाश्वतता एक घंटे में पकड़ी जा सकती है।''* इन पंक्तियों को पड़ कर एक आम इंसान की बुद्धि चकरा सकती है परंतु कल्पना के पंखों को कौन बाँध सकता है। **'बिरेश्वर सेन' (1)** के लघु वॉटरकलर चित्रों की बात करें तो हम यही अनुभव करेंगे की कि किसी चित्र की लंबाई व चौड़ाई से उस चित्र की गुणवत्ता नहीं आंकी जानी चाहिए। हीरे का आकार अक्सर छोटा ही होता है पर कितना अमूल्य। हमनें राज्स्थानी, मुगल, पहाड़ी लघु चित्र देखे होंगे जिनका आकार भी बहुत छोटा होता है किन्तु अगर बिरेश्वर सेन के चित्रों की बात करें तो वह तो ऐसे लगते हैं कि उन्होंने माइक्रोस्कोप का प्रयोग करके ही इनका निर्माण किया होगा। इनकी लंबाई व चौड़ाई दो या ढाई इंच के बीच की होती है किन्तु इनमें मीलों तक की

गहराई तथा विशालता होती है। शायद ही किसी अन्य भारतीय चित्रकार ने सफलतापूर्वक ऐसे नन्हें चित्रों का निर्माण किया होगा। हम इनमें हज़ारों फुट ऊँचे पर्वत, पठार, कल–कल करती नदियाँ व वादी और खेत–खलिहानों का भव्य दृश्य संजोया पाते हैं तथा चित्रकार की सूक्ष्म दृष्टि का प्रगटाव बड़े उत्तम ढंग से होता है। कुछ चित्रों में हम मानव, पक्षी व जानवरों का भी दृश्य पाते है। इन लघु भू–चित्रों को देखकर यूं लगता है कि हम किसी स्वप्न–लोक में प्रवेश हो गए हां या हम किसी कविता के भीतर समा गए हों। यहाँ हम अद्‌भुत शांती तथा अनूठे व सूक्ष्म वातावरण का स्वाद चख रहे हों। कहीं–कहीं आवारा बादल व बर्फ से ढके शिखर देखते हैं जिन पर डूबते सूर्य की लालिमा की चमक हमें मंत्र–मुग्ध कर देती है।

महान चित्रकार बिरेश्वर सेन का जन्म बंगाल के एक उच्च व प्रसिद्ध घराने में 1897 में कलकत्ता में हुआ। बाल्यावस्था से ही आपको कला की ओर रूझान था। आपके पिता– **'राय बहादुर सेलेश्वर सेन'** साहित्य के प्राध्यापक थे। वे कलकत्ता विष्वविद्यालय में कार्यरत थे तथा माता **'निहारनलिनी सेन'** का भी **'अबनिंद्रनाथ टैगोर'** व उनके शिष्य– **'नंद लाल बोस'** से अक्सर मेल–जोल होता था। बिरेश्वर सेन ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. 'कलकत्ता विश्वविद्यालय' से उतीर्णता पाई तथा पटना के 'बी.एन. कॉलेज' में 1923 में बतौर प्राध्यापक के पद से अपनी यात्रा का आरंभ किया। बिरेश्वर सेन ने अपनी बचपन की रूची को ना त्यागते हुए अबनिंद्रनाथ टैगोर तथा उनके सहयोगी जापानी कलाकारों से सीखते हुए अपनी कला में दिन–प्रतिदिन निपुणता प्राप्त की। इस पश्चात् आपने **'लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स'** में एक शिक्षक के रूप में कार्य करना स्वीकार किया। यहाँ आप 1926–32 तक कार्यरत रहे।[1] विख्यात रूसी चित्रकार– **'निकोलस रोरिक'** से मिलने के पश्चात् आपकी कला को नई दिशा मिली तथा आप उनके हिमालय के चित्रों से बेहद प्रभावित हुए।[2] आगे चलकर आपको उत्तर प्रदेश सरकार ने बतौर 'सेक्रेटरी' तथा 'डायरेक्टर' के रूप में नियुक्त करते हुए 'डिज़ाइन एण्ड रूरल डेवलपमेंट' के प्रचार का पूरा प्रभारी बना दिया। आपने 1945 में 'सेंट्रल डिज़ाइन सेन्टर, लखनऊ' की स्थापना की। वे बहुत समय तक 'लखनऊ कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स' के 'प्रिंसिपल' व 'डायरेक्टर' भी रहे। अपने जीवन काल में आपने अनेको–अनेक अद्‌भुत चित्रों को अपनी अनूठी शैली में उकेरा।[3]

बिरेश्वर सेन के लघु भू–चित्रों की कला प्रदर्शनियाँ देश व विदेश के मशहूर तथा बड़े शहरों में लगाई गई जिनमें लंडन, पेरिस, बर्लिन, टोक्यो, न्यूर्यार्क, कलकत्ता, बंबई, मद्रास, दिल्ली, लाहौर, लखनऊ, शिमला, दार्जिलिंग व नैनीताल प्रमुख हैं। आपके नन्हें व हीरे जैसे किमती चित्रों के प्रशंसक ना केवल राजा व महाराजा थे किन्तु उन दिनों के भारत सरकार के वरिष्ठ अधिकारी तथा उद्योगपतियों में भी आपके लघु भू–चित्रों को अपने व्यक्तिगत संग्रहों में शामिल करने की होड़ मची हुई थी। इन कला संग्रहकर्ताओं में 'एच.ई.लार्ड इरविन', 'लार्ड हैलेय', 'लार्ड रोनाल्डसे', 'लार्ड कारमाइकल', 'सर हैरी हैग,' 'सर मौरिस हैलट,' 'सर मौरिस ग्वायर, 'सर विलियम विन्सेंट,' 'सर फ्रैंक नॉयस,' 'सर वी. टी. कृष्णमाचारी,' 'टी. बी. डब्ल्यू बिशप (आई.सी.एस)', 'आर. वी. वर्नेड (आई.सी.एस)', 'एम. एस. रंधावा (आई.सी.एस),' 'अन्ना पावलोवा,' 'महाराजा पटियाला, मैसूर,

त्रावणकौर' तथा 'महारानी कूच विहार' भी शामिल हैं। 'रविन्द्रनाथ टैगोर,' 'श्री दौराब टाटा,' 'श्री जी.एम. हार्पर,' 'एन.सी.मेहता,' 'ए.एन.सप्रू', 'डा0 पन्ना लाल,' 'अमरनाथ झा,' 'जस्टिस वर्मा' व 'महाराजा बर्दवान' भी इनकी कला के प्रशंसकों में से थे।[4]

सूक्ष्म दृष्टि व शांत स्वभाव के बिरेश्वर सेन ने अपनी कला अपने अंतिम दिन 10 सितंम्बर, 1974 तक जारी रखी। एक प्रश्न के उत्तर में आपने कहा था, *''मानव मुक्ति प्राप्त करने के बहुत से रास्ते हैं जिस प्रकार जीवन व कला में।''* एक चर्चा के दौरान बिरेश्वर सेन ने यह भी कहा था, *''.....एक कवि और कलाकार क्या देखते हैं। क्या उनका नज़रिया व दिव्य दृष्टि हमारी जैसी होती है, या एक पलछिन बदलते क्षण की तरह होती है या फिर आँख का छलावा है, या इससे कहीं अलग तथा गहरा।''* [5] आकाश में बादल भी प्रतिदिन तैरते हैं, समुद्र की लहरें भी चमकती हैं तथा ऊँचे–ऊँचे पर्वतों की चोटियाँ भी डूबते सूरज की लालिमा से ओत–प्रोत हो जाती हैं। यह सृष्टि ईश्वर का अद्भुत उपहार है पर कितनी आँखें हैं जो इन प्रतिदिन की प्रतिक्रियाओं को पकड़ती हैं व अपने मन–मस्तिष्क में संजो लेती हैं। इससे भी ऊपर की क्रिया एक कलाकार जब अपनी तूलिका से इस संगीतमय व स्वप्न लोक के दर्शन करवाता है तो वह कोई छोटी बात नहीं। दो इंच से ढाई इंच या ढाई इंच से तीन इंच की फ्रेम में हम पूरे ब्रम्हांड की अनन्तता व विशालता का दिव्य दर्शन कर लेते हैं। एक छोटी सी खिड़की खोलकर दर्शक को मंत्र–मुग्ध करने वाले नज़ारों व दृश्यों को चख लेने का महान कार्य कुछ ही कलाकारों की कला समर्थता तथा कल्पना में हो सकता है। कहीं हम इन चित्रों में देवदार के ऊँचे–ऊँचे पेड़ों के पिछे छुपते हुए सूरज को डूबता पाते हैं तो कहीं आसमान तक ऊँची चोटी से छूते चाँद, तारों का भी अनुभव करते हैं। कुछ चित्रों में पर्वत मालाओं के एकांत में बैठे कुछ भिक्षुओं का भी उल्लेख पाते हैं तो कहीं चाँदी के रंग सी धुंध में स्याही रंग के पर्वत चुपचाप एक भक्ति मुद्रा में विलीन पाते हैं जहाँ एक कण से भी छोटा मानव अपनी आँखें मुंद कर ईश्वर की जिज्ञासा का आनन्द लेता नज़र आता है।[6]

महान अमेरिकन कवि– **'लू होल्ज़'** ने बिरेश्वर सेन के चित्रों को देखते हुए कहा था, *''एक पक्षी इसलिए नहीं गाता कि उसके पास कोई जवाब है, वो गाता है कि उसके पास एक गीत है।''* विख्यात फ्रेंच कवि– **'चार्ल्स बौडेलेर'** के अनुसार, *''प्रकृति एक ऐसा मंदिर है जिसके जीते जागते संदर्भ कभी–कभी अनसुलझे शब्दों का उच्चारण करते हैं। इन्सान चिन्हों के जंगलों में से गुजरता है तथा खुद को अजीबो–गरीब ढंग से देखता है।''* **'अ क्वाइट पैशन–नेचर एंड मैन इन आर्ट ऑफ बिरेश्वर सेन'** नामक एक कला प्रदर्शनी में प्रस्तुत किए गए बिरेश्वर सेन के लघु भू–चित्रों के बारे में प्रसिद्ध कला इतिहासकार व लेखक– **'डा0 बी.एन. गोस्वामी'** ने अनुभव किया, *''बिरेश्वर सेन के चित्रों में धड़कती जिंदगी की लय तथा समय के अंत तक प्रकृति की गोद में चमकती रोशनी जो कभी पहाड़ों की चोटियों पर पड़ती है तो कभी समुद्र में डूबते सूरज की लहरों को छू लेती है का अहसास उनके अद्भुत चित्रों में बखूबी से अनुभव कर सकते हैं। आपके जूनून का जलवा हम विशाल भू–दृश्यों में पाते हैं जो आपकी सूक्ष्म दृष्टि में संजोया हुआ था।''* गोस्वामी जी आगे लिखते है, *''आप ही ऐसे कलाकार होंगे जिन्हें महान अबनिंद्रनाथ टैगोर व उनके सहयोगी–नंद लाल बोस के साथ होने का सौभाग्य प्राप्त किया होगा। हमें लगता*

है कि इन महान कला पारखियों ने यूं ही नहीं बिरेश्वर सेन को अपना शिष्य स्वीकार किया होगा। उनको बिरेश्वर सेन के चित्रों में ईश्वर की छवि की झलक मिलती होगी।''

'डा0 एम.एस. रंधावा (आई.सी.एस)' जो बिरेश्वर सेन को नज़दिकी से जानते थे तथा उनकी कल्पना के उपासक थे लिखते है, *''बिरेश्वर सेन के समकालीन चित्रकारों में शायद बिरेश्वर ही ऐसे चित्रकार थे जिन्होंने सफलतापूर्वक प्राकृतवाद और पौराणिकी को पूर्ण रूप से विरोध किया क्योंकि वे बहुत ही साफ़ दृष्टि व तर्कवादी इंसान थे जो अपने हर भाव को प्रकृति में ही खोजने में मगन थे। बिरेश्वर सेन के चित्रों में भारत ने एक ऐसा महान विचारक व प्रकृति प्रेमी पाया जिसका शायद कोई सानी नहीं। यह कला जगत के लिए एक सुखद संतुष्टि है।''* वे आगे बयान करते हैं, *''बिरेश्वर सेन उनको 'रोरिक' के स्टूडियो 'नग्गर' कुल्लू में 1932 में मिले थे तथा रोरिक के चित्रों को देखते ही बिरेश्वर ने ठान लिया कि उन्हें उनका रास्ता मिल गया है। इसके पश्चात् बिरेश्वर ने कश्मीर का भ्रमण किया। वहाँ उनको रूह की खूराक भी मिली तथा उनके काम में एक नई ताज़गी का संचार हुआ। अब हिमालय के चित्र बनाना ही उनका मुख्य संकल्प हुआ तथा वे हिमालय को अपना आध्यात्मिक घर मानते थे।'* रंधावा लिखते हैं, *''मैंने बिरेश्वर को एक बार पूछा कि आप आजकल की कला शैली में काम क्यों नहीं करते? बिरेश्वर सेन ने बोला कि मैं एक प्राचीन अभिव्यक्ति का मानव हूँ मुझे अभी भी हिमालय के बीच में छुपी उनकी आत्मा को खोजना है जो सदियों से मानव को अपनी ओर चुंबक की तरह खींचती हैं।''* डा0 एम.एस. रंधावा ने एक किताब में लिखा था कि *''बिरेश्वर सेन कभी भी अपने चित्रों को दिवारों पर नहीं टांगते थे। वे उनको प्रेम भाव से अपनी किताबों के बीच में छिपाकर रखते थे या किसी सुंदर कपड़े में लपेट कर संभालते थे तथा कभी–कभी वे उनको विशेष अवसरों पर निकाल कर दोस्तों व मित्रों को दिखाते थे। अक्सर उनके परिवार के लोग उनके चित्रों को देखना चाहते थे। बिरेश्वर सेन जी बताते थे कि दिवार पर टंगे चित्रों का कुछ समय के पश्चात् ही आकर्षण खत्म हो जाता है। इस प्रथा को पुराने कई चित्रकार 'बस्ता' परंपरा कहते हैं।'* डा0 एम.एस. रंधावा भी इन चित्रों को देखते ही मंत्र–मुग्ध हो गए थे तथा इन चित्रों का उनके हृदय में विशेष स्थान रहा।[7]

बिरेश्वर सेन के लघु भू–चित्र सच में चित्र हैं या कविताएं है कहना कठिन है। उनके कुछ प्रमुख चित्र हैं – '**ट्रैंगक्विलिटी**', '**मी एण्ड माई मदर**,' '**द साधिका (2)**,' '**सी फॉर थॉसेल्फि, हिज़ ग्लोरी (3)**,' '**चिल्ड्रन ऑफ द सॉइल (4)**,' '**विक्टरी ऑफ द लाइट (5)**,' '**ब्रेक ऑफ डे (6)**,' '**पिल्ग्रिमस टू द हिमिस मानस्टेरी (7)**,' '**गोल्डन ग्लोरी (8)**,' '**सीक्रिट मिस्टरीज (9)**' और '**द पिनकल**'।

बिरेश्वर सेन भारत के उन चुनिंदा महान चित्रकारों में से एक हैं जो सदि में एक ही बार आते हैं तथा जिनकी कला यात्रा सूक्ष्म दृष्टि से सराभोर व ओत–प्रोत होती है, जो सामान्य दिखने वाले दृश्यों में ही हमें ब्रहमानंद का एहसास करवा सकते हैं। मानव केवल मंत्र–मुग्ध होकर इन चित्रों की कला शैली में डूब कर रहा जाता है व ऐसे दिव्य दृष्टि के चित्र दर्शक के रोम–रोम में समा जाने की क्षमता रखते हैं। यह लघु भू–चित्र एक नन्ही सी खिड़की खोलते हुए प्रकृति की

विशालता तथा भव्यता का पूर्ण आनंद दिलवा सकते हैं। इन चित्रों में मानव आकार का परिमाण तथा गहरी वादियों की गहराईयों के अनूरूप एक पूर्ण बहाली रखने में सफल हैं। गगन चुमती चोटियों के सन्मुख खड़ा होकर अपने आप को नापने का प्रयास करता है तथा यह पाता है कि वह कितना हीन व सूक्ष्म है एक रेत के कण की तरह जबकि सृष्टि का भव्य रूप उसकी सोच–समझ से कितना विशाल।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोस्वामी, बी.एन.; 2012, *एन्गेजिंग विद नेचर, जेन्ट्ली* । चंण्डीगढ़ ललित कला अकादमी, अ क्वाइट पैशन –नेचर एंड मैन इन आर्ट ऑफ बिरेश्वर सेन, अर्चना प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठः **8–9** ।
2. गोस्वामी, बी.एन.; फरवरी 14, 2010, *बिट्वीन हेवन एण्ड अर्थ,* आर्ट एण्ड सोल, द ट्रिब्यून।
3. गोस्वामी, बी.एन.; 2012, *एन्गेजिंग विद नेचर, जेन्ट्ली* । चण्डीगढ़ ललित कला अकादमी, अ क्वाइट पैशन –नेचर एंड मैन इन आर्ट ऑफ बिरेश्वर सेन, अर्चना प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठः **78** ।
4. *वहीं* /
5. सेन, बिरेश्वर ; 2012, *इसेन्षलज़ ऑफ आर्ट*। चण्डीगढ़ ललित कला अकादमी, अ क्वाइट पैशन –नेचर एण्ड मैंन इन आर्ट ऑफ बिरेश्वरसेन, अर्चना प्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठः **71–72** ।
6. चट्टोपाध्याय, पल्लवी ; नवंबर 1, 2017, *साइज़ मैटरज़,* लाइफस्टाइल न्यूज़, द इंडियन एक्सप्रेस।
7. रंधावा, एम.एस. ; 2012, *द आर्ट ऑफ बिरेश्वर सेन*। चण्डीगढ़ ललित कला अकादमी, अ क्वाइट पैशन–नेचर एण्ड मैंन इन आर्ट ऑफ बिरेश्वर सेन, अर्चना फ्रेस, नई दिल्ली, पृष्ठ : **76–77** ।

Plate No. 1

Plate No. 2

Plate No. 3

Plate No. 4

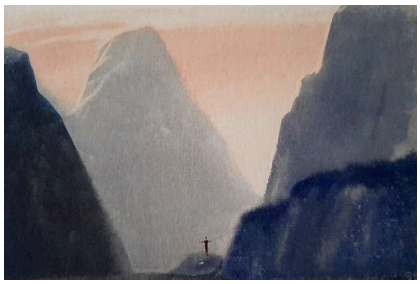

Plate No. 5

Plate No. 6

Plate No. 7

Plate No. 8

Plate No. 9